B-II
L-24
Ancient history

⇒ मौर्यकालीन समाज

- समाज वर्ण आधारित था (चार वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र)
- कौटिल्य ने वर्णाश्रम व्यवस्था को समाज का मुख्य आधार माना है।
- पुरुषों के लिए विवाह की आयु 16 वर्ष तथा स्त्रियों के लिए 12 वर्ष थी।
- मेगास्थनीज के अनुसार समाज में आर्ष विवाह प्रणाली प्रचलित थी।
  - आर्ष ⇓ गाय देना
- डायोनीसियस के अनुसार विवाह केवल अपने वर्ण तथा जाति में ही होते थे।
- समाज में विवाह विच्छेद की अनुमति थी
  - ↳ कौटिल्य ने इसके लिए मोक्ष शब्द का उल्लेख किया है।
- समाज में वैश्यावृत्ति की प्रथा प्रचलित थी और इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था।
  - ↳ वैश्या → गणिका
    - ↳ अध्यक्ष → गणिकाध्यक्ष
  - ↳ स्वतंत्र रूप से वैश्यावृत्ति करने वाली महिला
    - ↳ रूपाजीवा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ समाज में दासता

- समाज में दासप्रथा प्रचलित थी।
  - ↳ प्रमाण → अशोक के तीसरे स्तम्भलेख में दासों और भृत्यों के साथ सद्व्यवहार किया जाये

- कौटिल्य के अनुसार जो अनार्य हैं उन्हें दास बनाया जा सकता है।

*↳ मेगास्थनीज के अनुसार
⇓
समाज में दास प्रथा नहीं थी

- इन दासों का मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान था।

⇒ दासों के प्रकार

↳ त्रिपिटक के अनुसार → 4 प्रकार
↳ कौटिल्य के अनुसार → 9 प्रकार

- कौटिल्य के अनुसार मौर्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक घटना थी → दासों को बड़े पैमाने पर कृषि कार्य में लगाया गया।
- समाज में दासों की स्थिति संतोषजनक थी, उन्हें सामान एवं संपत्ति के क्रय - विक्रय का अधिकार था
- मेगास्थनीज के अनुसार समाज में सात (7) प्रकार की जातियां थीं → कृषक, कारीगर, दार्शनिक, सैनिक, निरीक्षक, सभासद, अहीर
- समाज में कपड़ा उद्योग मुख्य व्यवसाय था।

→ प्रवहण → एक प्रकार का सामाजिक त्यौहार था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

⇒ मौर्य काल की आर्थिक दशा -

⇓

मुख्य आधार – कृषि

मुख्य व्यवसाय – कपड़ा उद्योग

- कृषि के विकास का कारण

⇓

- लोहे का अधिकाधिक प्रयोग
- नहरों का जाल
- सिंचाई के लिए अरघट्ट (रहट) का प्रयोग
- कुंए का योगदान
- गोपालन नामक अधिकारी की नियुक्ति
  ↳ जंगलों की देख-भाल

⇒ उद्योग धंधे

- सूती वस्त्र उद्योग का केन्द्र ⇒ कलिंग, मगध, काशी, कोसल, विदेह
- पुण्ड्र → सूती कपड़े का प्रकार (बंगाल में)

→ कपड़े के अन्य प्रकार → छींट, चिन्द्रज, दुकूल, चीनांशुक (चीन से)

- मौर्य काल में व्यापार के लिए उत्तरापथ एवं दक्षिणापथ का उल्लेख है। इस समय जलीय व्यापार पर भी राज्य का पूर्ण नियंत्रण था। राज्य जलयानों का भी निर्माण करता था (नियमन – नवाध्यक्ष)
- समुद्री बीमा होता था।

⇒ व्यापार –
- वस्तु की कीमत का निर्धारण → पण्याध्यक्ष
- वस्तु की माप-तौल → पौतवाध्यक्ष

↳ सबसे छोटा बटखरा/भार ⇒ सुवर्ण मासक

↳ भूमि माप की सबसे छोटी इकाई = परमाणु
बड़ी ईकाई = युका

→ **मौर्य कालीन सिक्के**

→ सोने के सिक्के → निष्क → सुवर्ण मासक

* मौर्य कालीन सोने का सिक्का अभी तक खोजा नहीं गया है।

→ चांदी के सिक्के → पण

→ तांबें → माषक /माषक

↳ सबसे छोटा सिक्का → काकणी

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

– सिक्कों के निर्माण एवं ढलाई पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण था।

→ सिक्कों पर आकृति → नाग, मोर, पहाड़, स्वास्तिक, चांद

⇒ **व्यापार**

↳ सबसे प्रमुख मार्ग → उत्तरापथ

पुष्कलावती/पेशावर (पश्चिम) ← उत्तरापथ → (पूर्व) ताम्रलिप्ति (बंगाल)

⇓

इसी उत्तरापथ को शेरशाह सूरी ने सड़क-ए-आजम कहा था

↳ एवं विलियम बेंटिक ने पुनर्निर्माण करवाया था।

↳ दक्षिणापथ ⇒ श्रावस्ती (UP)
↓
प्रतिष्ठान (MH)

⇒ जलीय व्यापार

→ यूनानियों ने भृगुकच्छ (भड़ौच) को बेरीगाजा नाम दिया।
↳ यह भारत का प्रवेश द्वार था।

↳ श्रेणी / श्रेणियां ⇒ विभिन्न व्यापारियों एवं शिल्पकारों का संगठन
↳ श्रेणियों का अपना न्यायालय होता था, जिसका मुखिया -
↳ महाश्रेष्ठिन

⇒ मौर्य काल में भूमि की श्रेणियां

1- अदेवमातृक - बिना वर्षा के अच्छी खेती
2. कृष्ट → जुती हुई भूमि
3- अकृष्ट → बिना जुती भूमि
4- स्थल → ऊँची भूमि
5- सीता → राजकीय भूमि

(सभी भूमियों पर राजा का नियंत्रण होता था।)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

⇒ आयात - निर्यात

पश्चिमी तट का व्यापार
⇓
बन्दरगाह → भृगुकच्छ
→ सोपारा

पूर्वी तट का व्यापार
↓
बन्दरगाह – ताम्रलिप्ति

⇒ मिस्र को निर्यात
⇓
- हाथी दांत
- कछुए
- सीपियां
- मोती
- रंग
- बहुमूल्य लकड़ी
- नील

↳ अन्तर्देशीय व्यापार → सार्थवाह के माध्यम से होता था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

⇒ धार्मिक जीवन

- मौर्य काल में वैदिक धर्म प्रचलित था।
- कर्मकाण्ड सामान्यतः अभिजात्य ब्राह्मण तथा क्षत्रियों तक सीमित था
- पतंजलि के अनुसार – मौर्यकाल में देवताओं की मूर्तियां बनाकर बेची जाती थी।
⇓
मूर्तिकार → देवताकारू
- ब्राह्मणों को कर मुक्त भूमि (अनुदान) → ब्रह्मदेय